REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

भारतीय नाट्य साहित्य में लोक तत्त्व का योगदान

रेनु
भाोधार्थी, पी॰एच॰डी॰ (हिन्दी) नेट, (जे॰आर॰एफ॰) हिसार (हरियाणा)

शोध आलेख सार –

भारतीय नाटक परम्परा बहुत प्राचीन है, परन्तु हिन्दी गद्य विधाओं में इसका विकास मंद गति से हुआ है। आधुनिक युग में हिन्दी नाटक महत्वपूर्ण प्रक्रिया से गुजर रहा है। किसी भी देश का साहित्य वहाँ के जन–जीवन का साक्षात् आईना होता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय जो सुनहरे सपने भारतवासियों ने देखे थे, वे समाज में फैली बुराइयों व स्वार्थ के अंधकार में लुप्त होते गए। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात कला, साहित्य और संस्कृति के विकास की ओर ध्यान दिया गया। यहीं से नाटकों में लोक तत्त्वों का समावेश आरम्भ हो गया। स्वातन्त्र्योत्तर नाटकों में लोक तत्त्व का प्रयोग समकालीन जीवन से सम्बन्धित समस्याओं पर प्रकाश डालने के लिए हुआ। 20वीं शताब्दी में लक्ष्मीनारायण मिश्र, हरिकृष्ण प्रेमी, रामकुमार वर्मा, वृन्दावन लाल वर्मा, चतुरसेन शास्त्री तथा भगवती चरण वर्मा सरीखे नाटककारों ने सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक और समस्या प्रधान नाटकों की रचना की। लोक तत्त्वों का आगमन हिन्दी नाट्य साहित्य में एक ऐतिहासिक घटना मानी जा सकती है। स्वातन्त्र्योत्तर नाटकों में लोक तत्त्व ने रंगमंच और दर्शकों की दूरी को कम करके उन्हें नजदीक लाने का बड़ा सराहनीय कार्य किया है।

लोक तत्त्व की अवधारणा :–

लोक तत्त्व शब्द की व्याख्या विभिन्न विद्वानों द्वारा अपने–अपने दृष्टिकोण के आधार पर की है। मोटे तौर पर देखा जाए तो लोक शब्द का अर्थ किसी क्षेत्र विशेष के रूप में लिया जा सकता है। इस प्रकार लोक तत्त्व से हमारा तात्पर्य किसी क्षेत्र विशेष में प्रचलित परम्पराओं, रीति–रिवाजों, त्योहारों, पूजा–पद्धतियों, मनोरंजन के विभिन्न रूपों, व्रत–अनुष्ठानों तथा रहन–सहन आदि सभी तत्त्वों को शामिल किया जा सकता है।

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार ''लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना और अंहकार से शून्य है और जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है, ऐसे लोक की अभिव्यक्ति में जो तत्त्व मिलते हैं, वे लोक तत्त्व कहलाते है।''[1]

लोक जीवन प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक अपनी अलग–अलग विशेषता रखता है, लोक जन–मानस में लोक कथाएँ, लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोकगीत आदि प्राचीन परम्पराएं प्रचलित हैं। इन सभी के समावेश से ही लोक जीवन की स्पष्ट अभिव्यक्ति की कल्पना सम्भव है।

लोक नाट्य एवं अनुभूति पक्ष :–

लोक नाट्यों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सरलता एवं सहजता में परिलक्षित होती है। इनमें झूठे दिखावे और कृत्रिमता के लिए कोई स्थान नहीं है, बल्कि इनमें तो जीवन की सच्ची अनुभूतियां ही सहज रूप में दर्शायी जाती हैं, पश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण से जीवन–मूल्य निरन्तर गिरते जा रहे थे, जिसके परिणामस्वरूप नाटककार तंग आ चुके थे। उन्होंने महसूस किया कि अपनी मिट्टी से जुड़ा लेखन ही आमजन

के जीवन में उत्कृष्ट परिवर्तन ला सकता है। अपनी मिट्टी से जुड़े नाटककारों में डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल का नाम लिया जा सकता है। श्री इलाचन्द्र जोशी जी ने उनके बारे में लिखा भी है:–

''मुझे लगा कि सभ्य नागरिक बनने का इच्छुक यह लेखक अपने व्यक्तित्व की देहाती मिट्टी को जी–जान से प्यार करता है, अपने नागरिक बन्धुओं के बीच उसके कारण संकुचित न होकर वह उस पर गर्व का अनुभव करता है।''[2]

डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल दर्शकों का रंगमंच के प्रति आकर्षण उचित ही मानते हैं। वे कहते हैं कि नाटक आमजन की मानसिकता को ध्यान में रखकर लिखने चाहिएं। सगुन पंछी, व्यक्तिगत, सत्य हरिश्चन्द्र आदि नाटक भारतीय नाट्य परम्परा और भारतीय दर्शकों को ध्यान में रखकर ही लिखे गये हैं।

लोक तत्व एंव नवीन प्रयोग :–

स्वातन्त्र्योत्तर युग में लोक तत्त्व के प्रवेश से ही नाटकों में एक नई ऊर्जा का समावेश हुआ है। आधुनिक शिल्प के साथ समन्वित कर नाट्य पद्धतियों में नये–नये प्रयोग किये गये हैं। इन प्रयोगों से साहित्यिक नाटकों में लोक तत्त्व के परिणामस्वरूप शिल्प की दृष्टि से रंजकता आयी है, डॉ॰ बच्चन सिंह ने लिखा है– ''जहाँ तक विषय वस्तु का संबंध है, आज का नाटक लोक नाटकों में कुछ विशेष उपलब्ध नहीं कर सकता, लेकिन लोक से पा सकता है, उनकी पद्यबंद्ध संवाद शैली के सम्बन्ध में आज का वस्तुवादी युग विचार करना भी पसन्द नहीं करेगा। हाँ, लोक नाटकों के रंगमंच से बहुत कुछ प्रेरणा ग्रहण की जा सकती है।''[3]

लोक तत्व एवं रंगमंच :–

नाटक, रंगमंच और दर्शकों में घी–शक्कर का मेल है, किसी एक भी तत्त्व के अभाव में यह विधा विकसित नहीं हो सकती। हिन्दी नाटक और रंगमंच पिछले कई दशकों से एक ही परिपाटी पर चलता रहा है। अब तक केवल पौराणिक और ऐतिहासिक नाटक लिखे और खेले जाते रहे हैं। इनमें भूवनेश्वर जैसे नए नाटककार की उपेक्षा हो या फिर मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' के संदर्भ में तथ्य हो। लोक नाट्य और रंगमंच की सहज व प्रवाहमयी शैली अपनाने के कारण नाटककार ने जनमानस में प्रचलित विश्वास को प्रश्रय दिया है, जैसेः– जादु–टोने, भूत–प्रेतों व पूर्व जन्मों में विश्वास होना। ये सभी तत्व रंगमंच को जन सामान्य से जोड़ने में सहायक सिद्ध होते हैं। नरनारायण राय जी ने इस विषय में लिखा भी है –

'शेक्सपीयर भले ही यह नहीं मानते रहे हों, कि भूत–प्रेत भी होते हैं, लेकिन वे जानते थे कि उनका दर्शक इस बात पर विश्वास रखता है, नाटककार लाल ने दर्शकों की रूचि और विश्वास को कहीं सीधे और ज्यों का त्यों तथा कहीं उसे परिवर्तित कलेवर में स्वीकार किया है, उनके नाटकों के आधार पर ऐसे ही उदाहरणों के अम्बार लग जाएंगे।''[4]

लोक तत्त्व के कारण ही यह आमजन की पीड़ा को सहज व सरल भाषा में आम आदमी के सामने अभिव्यक्त कर सकने के योग्य हो सका है। यह रंगमंच जनचेतना को लोक भाषा के माध्यम से समाज में फैली बुराइयों और दुराचारों से रूबरू करवा कर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है।

पौराणिक नाटकों मे लोक तत्त्व का मिश्रण :–

पौराणिक नाटककारों की शास्त्रीय शैली से ओत प्रोत लोक अनुकूल अभिनय का महत्व समाज के लगभग सभी क्षेत्रों में सदैव सराहनीय रहा है। इन नाटककारों में भास, अश्वघोष तथा कालिदास आदि नाटककारों का नाम अग्रणी है। ''प्रत्येक प्रांतीय और आंचलिक नाट्य सृष्टि का इतिहास इस विकास की स्वतन्त्र समृद्वि का इतिहास है। कीर्तनिया, रासलीला, रामलीला, स्वांग और कठपुतलियों का तमाशा आदि इसी नाट्य परम्परा के जीवंत प्रतीक कहे जा सकते हैं।''[5]

लोक नाट्य देहाती जनता के रोजमर्रा की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जिसमें दिखावटीपन के लिए कोई स्थान नहीं है। इसमें अनावश्यक चेष्टा व कोई शास्त्रीय बन्धन नहीं होता है बल्कि परम्परागत कथा को संगीत व नृत्य से सुशोभित कर स्वाभाविक अभिव्यक्ति दे दी जाती है। इस सम्बन्ध में डॉ॰ श्याम परमार जी का विचार है।

''लोक तत्त्व से तात्पर्य नाटक के उस रूप से है, जिसका सम्बन्ध विशिष्ट शिक्षित समाज से भिन्न सर्व साधारण के जीवन से हो और जो परम्परा से अपने क्षेत्र के जन समुदाय के मनोरंजन का साधन रहा हो।''[6] लोक जीवन में प्रचलित मान्यताओं व कथानकों के माध्यम से नाटककारों ने अपने भावों के उद्‌गारों की बड़ी मनोरम अभिव्यक्ति की है।

आधुनिक नाटक एवं लोक तत्त्व :–

आधुनिक नाटककारों ने अपने नाटकों में पात्रों के मनोवैज्ञानिक धरातल पर रचना करके उनके मानसिक तनावों, मनोविकृतियों व जटिलताओं के विविध रूपों को उजागर किया है, जो केवल लोक तत्त्व के कारण ही सम्भव हो पाया है। जिस प्रकार से नाटककार डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल ने 'किस्सा तोता–मैना' जो कि एक प्रचलित लोक गाथा है, उसमें उन्होंने राजा अंगध्वज की कथा कही है। इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने स्त्री–पुरूष के सम्बन्धों पर प्रकाश डालना चाहा है। स्वातन्त्र्योत्तर नाटकों में लोक नाट्य के प्रवेश की विशेषता उनका प्रतीकात्मक तत्त्व रहा है। ''शिल्प की दृष्टि से यह पूर्णतः मौलिक और अपनी धरती से उपजा अभिनव रंग प्रयोग है जिसमें नोटंकी, रामलीला, पारसी और यथार्थवादी शैलियों का सम्मिश्रण किया गया है।''[7]

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लोक साहित्य को निरर्थक एवं अनुपयोगी समझा जाने वाला दृष्टिकोण मिथ्या सिद्ध हो चुका है। लोक साहित्य को मानवीय संवेदना को व्यक्त करने के लिए अभिव्यक्ति को व्यक्त करने के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया जा रहा है। ''लोक साहित्य की अभिव्यक्ति शैली इस बात को सार्थक करती है कि यदि विशिष्ट साहित्य में उसका प्रयोग किया जाए तो वह अधिक प्रभावी हो सकेगा। वर्तमान हिन्दी साहित्य में कविता तथा कहानियों में कुछ ऐसे प्रयोग दृष्टव्य हैं।''[8]

लोक तत्व के मिश्रण से लोक नाटकों के पात्र साहित्यिक नाटकों में प्रवेश पा चुके हैं। स्वातन्त्र्योत्तर नाटककारों ने पौराणिक पात्रों को नई अर्थव्यंजना से निखारा है। 'अंधायुग' के सभी पात्र मनोवैज्ञानिक धरातल पर आधुनिक जीवन की कहानी कहते प्रतीत होते हैं। 'द्रौपदी नाटक विभाजित रूपों में जीने की अर्थव्यंजना करता है। नये–नये प्रतीक विधान लोक तत्त्व के माध्यम से सामने आये हैं।

संदर्भ–सूची :–

1. हिन्दी साहित्य कोश (ज्ञान मण्डल काशी, 2015 वि॰) पृ॰ 685–86.
2. 'मेरा हमदम–मेरा दोस्त' – सं॰ कमलेश्वर, पृ॰ 73.
3. 'हिन्दी नाटक'– बच्चन सिंह, पृ॰ 25
4. 'रंगचेता नाटककार, लक्ष्मीनारायण लाल– नरनारायण राय, पृ॰ 51.
5. 'नाटककार मोहन राकेश'– जीवन प्रकाश जोशी, पृ॰ 12.
6. 'लोकधर्मी नाट्य परम्परा'– डॉ॰ श्याम परमार पृ॰ 30–31.
7. 'समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच'– जयदेव तनेजा, पृ॰ 35
8. 'मालवी लोक साहित्य– एक अध्ययन'– डा॰ श्याम परमार, पृ॰ 372.